हुआना इनेस का क़िताबघर
हुआना इनेस की दुनिया

लेखनः पैट मोरा, चित्रः बिएट्रिज विडाल
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हुआना इनेस का क़िताबघर
हुआना इनेस की दुनिया

लेखनः पैट मोरा, चित्रः बिएट्रिज विडाल

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आभार

मैं सभी सोर हुआनिस्ताओं (सिस्टर हुआना के प्रशंसक), सोर हुआना का अध्ययन करने वाले विद्वानों, खास तौर से मार्गरेट सेयर्स पेयडन के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ।

मेरे पुस्तक प्रेमी बच्चों बिल, लिबी व सिसी के लिए

- पी.एम.

मेरे माता-पिता को, जिन्होंने मुझ गुलाबी पंख और शहद दिया।

- बी.वी.

“हुआना इनेस!” माँ ने पुकारा। “तुम क्या कर रही हो?” हुआना ने एक बड़ी-सी क़िताब को बन्द किया। उसके दादा पेद्रो, हमेशा पढ़ते रहते थे। यहाँ, मैक्सिको शहर के पास नए स्पेन में बने उनके घर में दादा पेद्रो को पढ़ने का शौक था। उनके घर में इधर-उधर क़िताबों के ढ़ेर थे। हुआना, दादा की क़िताबों को उठा अपना एक घोंसला बना लेती थी। वह उन्हें खोलती, पन्ने पलटती, चित्रों को देखती। वह पढ़ पाने के लिए बहुत छोटी थी। पर वह यह जानना चाहती थी कि उनमें लिखे शब्द क्या कहते हैं।
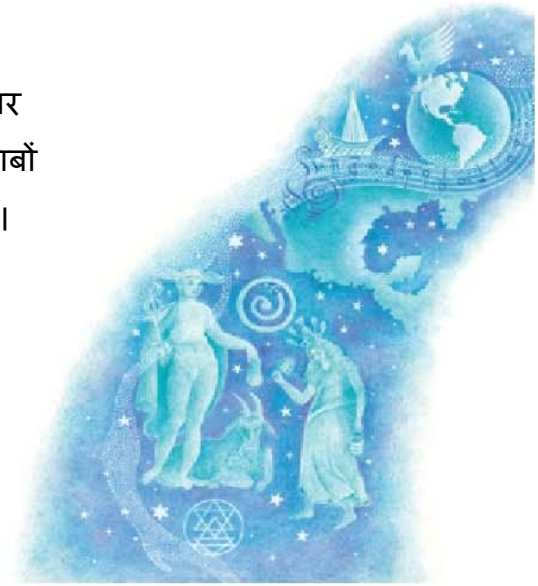
हुआना का जन्म से आज से कई शताब्दियों पहले 1648 में हुआ था। जब वह तीन बरस की थी तब उसका पसन्दीदा सवाल था "क्यों?"

"ज्वालामुखी से धुंआ क्यों निकलता है?" घर के बाहर खेलते वक़्त पहाड़ों से निकलते धुंए को देख उसने पूछा।

"ममा, पत्ते हरे क्यों होते हैं?" नदी के पास जंगली फूल चुनते समय हुआना ने पूछा। हुआना को अपने घर में उगे मुलायम पर कंटीले गुलाब सबसे अच्छी लगते थे। वह उंगलियों के पोरों से उनकी खिली पंखुड़ियों और चुभने वाले कांटों को सहलाती। उनकी मीठी ललाई को सूंघती। वह गुलाबों पर तुकबन्दी करती, रोज़ा हरमोसा, रोज़ा हरमोसा (सुन्दर गुलाब, सुन्दर गुलाब)।

वह शब्दों की ध्वनियों के साथ खेलती। वह पथरीले पथ पर दौड़ते समय गाती, "लूना, कूना, बैल्ला एस्तरैला (चाँद के पालने पर, खूबसूरत सितारा)।

एक सुबह हुआना इनेस की बड़ी बहन ने कहा, "हुआना इनेस, मैं आज तुम्हारे साथ नहीं खेल सकती।"

"क्यों?" हुआना इनेस ने जानना चाहा।

"मैं पास ही एक घर में पढ़ना सीखने जाने वाली हूँ," उसकी बहन ने बताया। "मैं दादा जी की तरह क़िताबें पढ़ूँगी।"

"मैं भी! मुझे भी तुम्हारे साथ जाना है!" हुआना इनेस ने कहा।

"ममा मुझे भी पढ़ना सीखना है।"

"पर तुम तो अभी बहुत ही छोटी हो, हुआना इनेस," माँ ने जवाब दिया।

हर दिन हुआना इनेस अपनी बड़ी बहन को स्कूल जाते देखती।

एक दिन जब माँ किसी दूसरे काम में मसरूफ़ थी, हुआना इनेस बड़ी बहन के पीछे चल दी। वह सावधानी से पेड़ों और झाड़ों के पीछे छिपते-छुपाते चली। जब स्कूल में पढ़ने वाली बड़ी लड़कियाँ अन्दर चली गईं, हुआना ने खिड़की से झाँक कर देखा। उसने उन लड़कियों को पढ़ते और लिखते देखा।

अगले दिन हुआना ने अपनी बहन का फिर पीछा किया, पर इस बार वह छिपी नहीं। वह सीधे अन्दर घुस शिक्षिका के पास गई और बोली, ''सिनोरा, मुझे पढ़ना सीखना है, क्या आप मुझे पढ़ना सिखाएंगी?''

बड़ी लड़कियाँ इतनी पिद्दी-सी लड़की को यह कहते सुन ठिठिया कर हंसने लगीं। पर शिक्षिका ने उसे ध्यान से देखा। तब कहा, ''हाँ तुम पढ़ने आ सकती हो हुआना, पर तुम्हें ध्यान से पढ़ना और सही बरताव करना होगा।''

''मैं कछुए की तरह चुप रहूँगी,'' हुआना ने कहा।

''तुम्हें पहले आखर सीखने होंगे, ए, बी, सी, डी, . . .'' शिक्षिका ने कहा।

''क्यों?'' हुआना ने फौरन अपना पसन्दीदा सवाल दागा।

''हम आखरों से ही शब्द बनाते हैं। यह देखो आर-ओ-एस-ए, रोज़ा।'' हुआना इनेस ने रोज़ा यानी गुलाब के अक्षरों को देखा। रोज़ा को वे गुलाब की लाल पंखुड़ियों जैसे नज़र आए।

घर आ हुआना ने बार-बार आक्षर लिखे। उसने जल्द ही पढ़ना और लिखना शुरू किया। और वह तुकबंदियाँ करने लगी। "ममा क्या मैं आपके जन्मदिन के लिए एक गाना लिखूँ? मैं उसमें कहूँगी कि तुम एक सुन्दर सितारे-सी चमकती हो, ऊना एस्ट्रैला बैला, या कि तुम खूबसूरत गुलाब-सी मुस्कुराती हो, ऊना रोज़ा हरमोसा। ठीक?"

मी मामा एस ऊना एस्ट्रेला बैला,

मी मामा एस ऊना रोज़ा हरमोसा।

दोपहरी के खाने में हुआना इनेस को गरमागरम टॉरटियास (मक्की की रोटी) के साथ चीज़ (सुखाया गया पनीर) को धीमे-धीमें चबाना पसन्द था।

"चीज़ मत खाओ हुआना इनेस! जो लोग चीज़ खाते हैं वे चतुर नहीं होते। उनके दिमाग में चीज़ जाकर जम जाती है," स्कूल में हुआना की एक दोस्त ने कहा।

उस दिन हुआना इनेस ने अपनी माँ और दादा से कहा, "अब से मैं चीज़ नहीं खाऊँगी, वह मेरे दिमाग के लिए खराब होगा।"

दादा हंसे। "यह तुम्हें किसने बताया?" उन्होंने पूछा।

"मेरी दोस्त ने," हुआना ने जवाब दिया। "मैं चीज़ नहीं खाऊँगी, ममा क्योंकि मैं पढ़ने के लिए मैक्सिको शहर जाना चाहती हूँ।"

"मैक्सिको शहर!" उसकी माँ बोलीं।

"हाँ, मेरी शिक्षिका ने बताया है कि वहाँ एक बड़ा विश्वविद्यालय है। उसके क़िताबघर में हज़ारों क़िताबें हैं! ज़रा सोचो तो?"

"विश्वविद्यालय में केवल लड़के ही जा सकते हैं हुआना इनेस," उसकी माँ ने कहा।
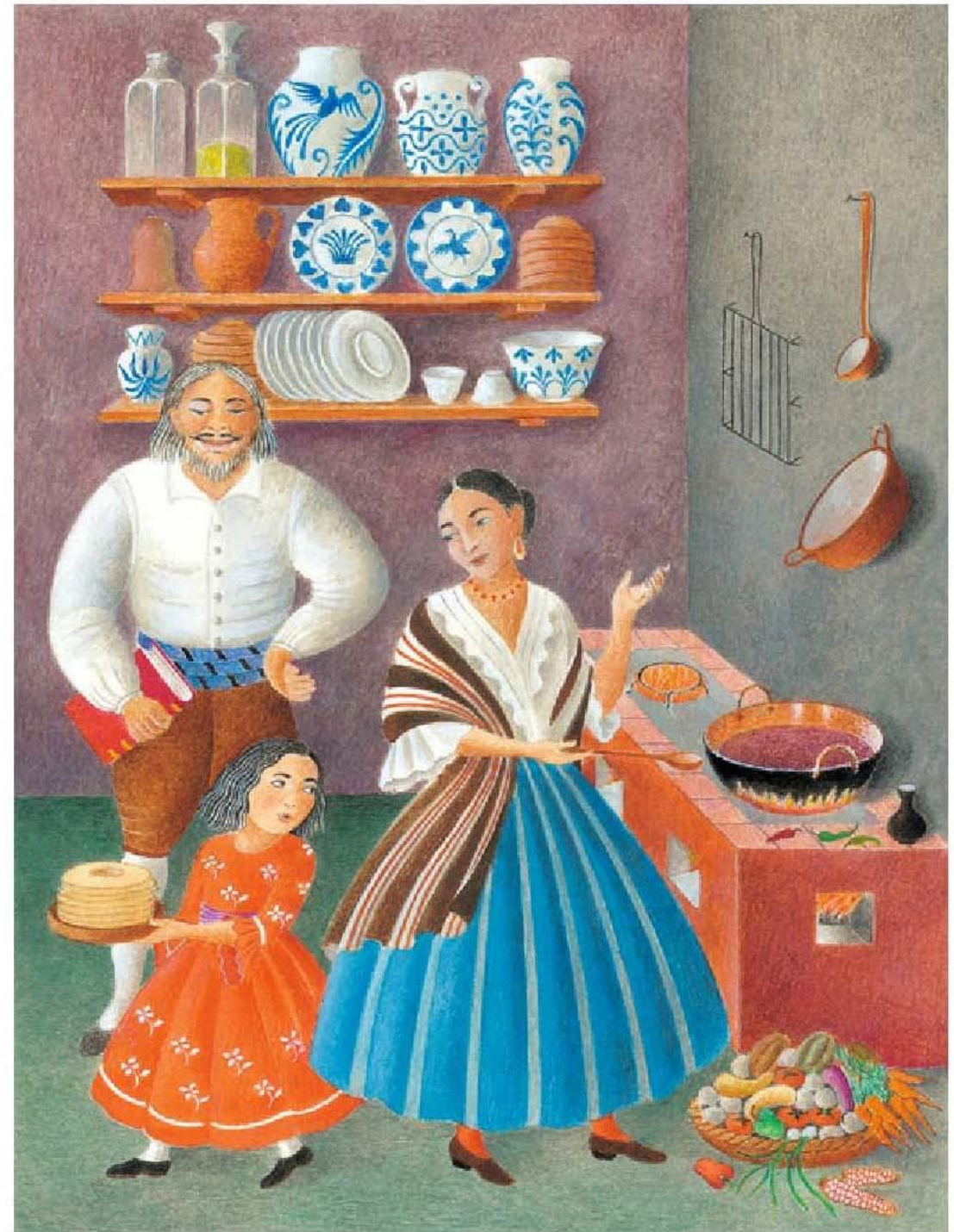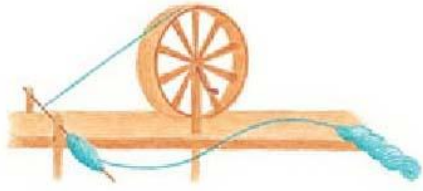
अगली रात हुआना खाना खाने के लिए लड़कों के कपड़े पहन कर आई। "हुआना इनेस!" माँ ने खीझ कर कहा। "यह तुम क्या कर रही हो?"

"मैं अभ्यास कर रही हूँ, ताकि बड़ी होकर मैक्सिको शहर के विश्वविद्यालय में पढ़ने जा सकूँ। मैं उनके क़िताबघर में जाना चाहती हूँ। मैं संगीत और पौधों और सितारों के बारे में पढ़ना चाहती हूँ। मैं कविताएं लिखना चाहती हूँ। तुम तो जानती हो ममा, लड़कियाँ लड़कों जितनी ही चतुर होती हैं।"

"हुआना इनेस, तुम गुलाब के कांटों जितनी ही ढीठ हो। आख़िरी बार बता रही हूँ, सिर्फ पुरुष ही विश्वविद्यसलय में जा सकते हैं," माँ ने दृढ़ आवाज़ में कहा। "तुम किस्मतवाली हो जो पढ़ना-लिखना जानती हो। लड़कियों का काम घर में मदद करना होता है।"

"पर ममा, लड़कियों कातने-सीने से ज्यादा कर सकती हैं," हुआना ने बहस की। "हम पढ़ सकती हैं, और जो कुछ हमने जाना-सीखा है उसे सिद्ध भी कर सकती हैं।"
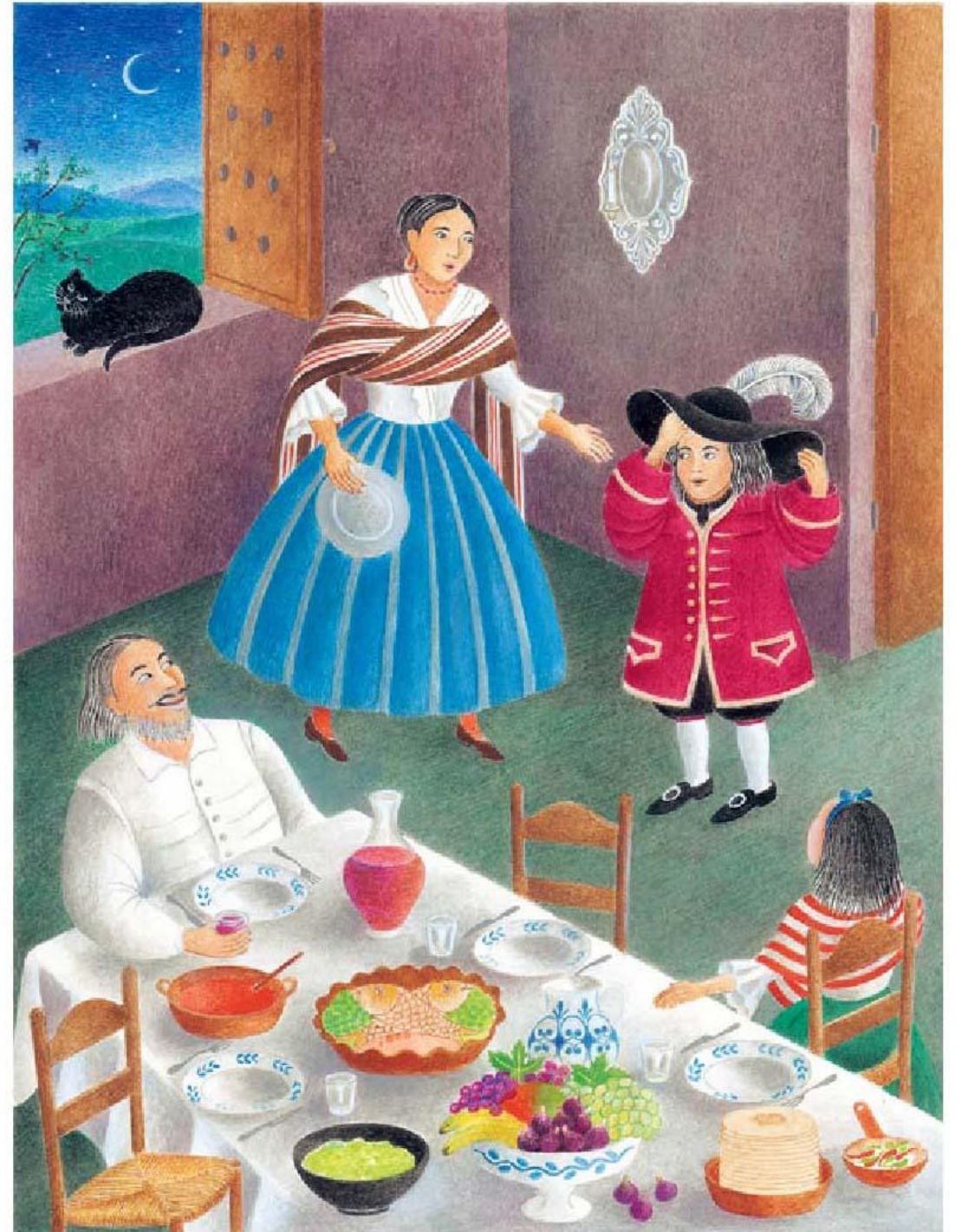
जब हुआना तक़रीबन आठ साल की थी, एक दिन वह दौड़ती हुई घर आई और बोली, "ममा! देखो तो! मैंने गिरजे की प्रतियोगिता में सबसे अच्छी कविता लिखी और मुझे ईनाम मिला - एक क़िताब! अब मैं अपना क़िताबघर बना सकती हूँ।

क़िताबें हुआना की शिक्षिकाएं थीं। माह-दर-माह हुआना दादा की क़िताबें पढ़ती रही और बार-बार कहती रही "पॉर फेवॉर ममा! मेहरबानी से मुझे पढ़ने के लिए मैक्सिको शहर जाने दो।" आख़िरकार जब वह दस बरस की हुई उसकी माँ ने उसे उसके मौसी-मौसा के पास मैक्सिको शहर भेज दिया।
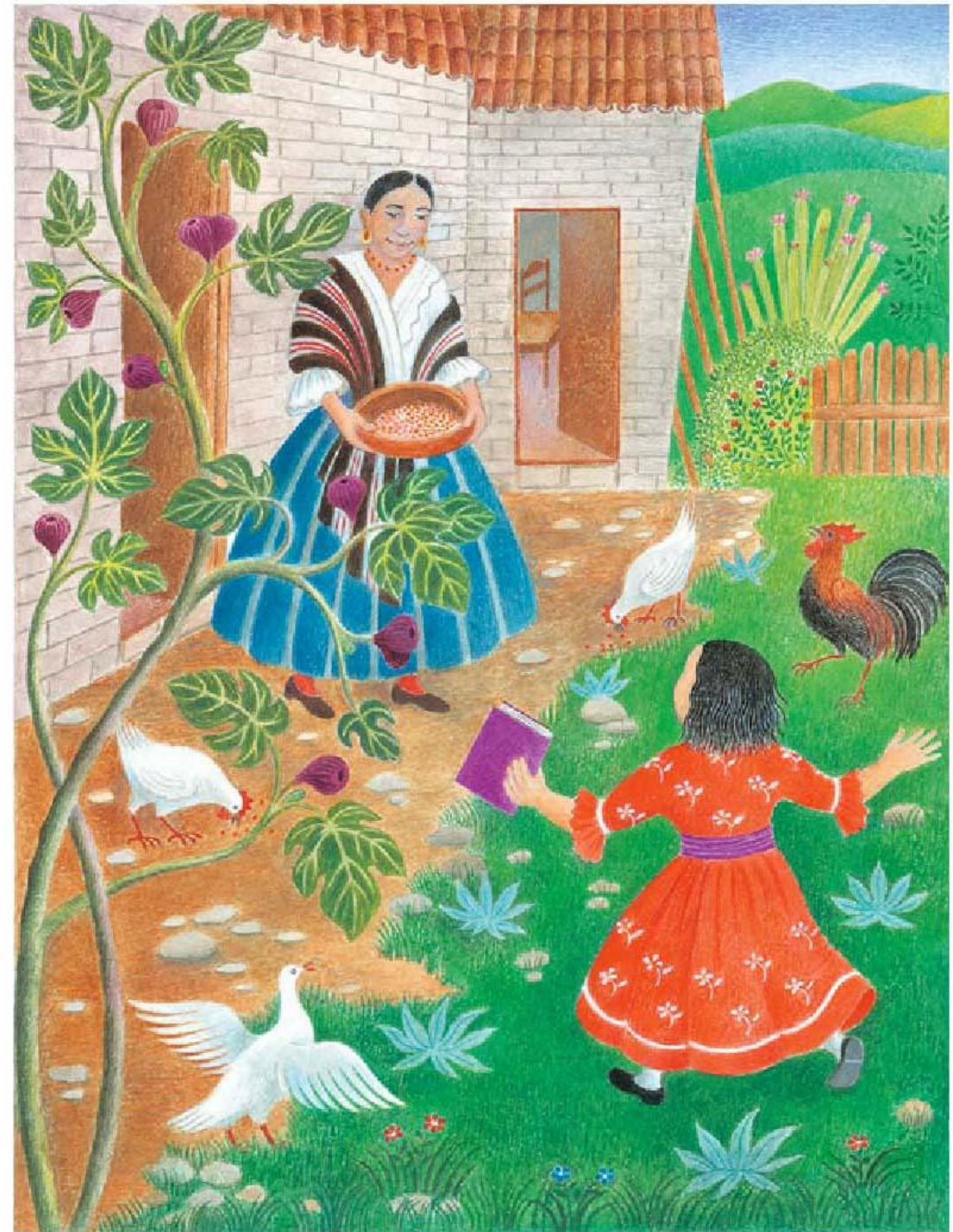
एक बड़े शहर में आना कितना उत्तेजना से भरा था। हुआना ने किस्म-किस्म के लोगों को देखा, कई भाषाओं को सुना और जब वह महल और विश्वविद्यालय के पास से गुज़री तो वह खुशी से मुस्कराई। उसने जो कुछ देखा उसके बारे में एक कविता लिखी। "टिया मारिया," उसने अपनी मासी से कहा, "टान्टो क्वे वेरा! क्वे वाय अ सेर?" मारिया मासी इतना कुछ देखने को है। मैं आख़िर बनूँ तो क्या?

क्योंकि लड़कियाँ विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ सकती थी, हुआना के मौसी-मौसा ने घर में आ कर पढ़ाने के लिए एक प्रशिक्षक को तैनात किया। "सेनोर, मैं गिरजे में लैटिन सुनती हूँ, क्या आप मुझे लैटिन पढ़ाएंगे?" हुआना जल्द ही अपने प्रशिक्षक से दूसरी भाषाएं भी सीखने लगी। उसे सजने-संवरने से ज़्यादा चिन्ता आपनी क़िताबों की रहती थी। वह अपनी खोपड़ी पर उंगली ठकठका कर कहती "मैं अपनी खोपड़ी के बाहरी हिस्से को क्यों सजाऊँ, अगर अन्दर से वह निहायत खाली हो?"

हर कुछ जानने को उत्सुक हुआना के दिमाग में सवाल कुलबुलाते थे। इतना विशाल गिरजा उन्होंने भला कैसे बनाया होगा? वे लोग कौन-सी भाषा बोल रहे हैं। उसने जब लम्बे चोंगे पहने ननों को देखा, उसने मौसी से पूछा "टिया मारिया, ननें करती क्या हैं? क्या वे कॉन्वेन्ट में पूरे दिन अध्ययन कर सकती हैं, पढ़-लिख सकती हैं?''

जब हुआना अपनी मौसी के साथ महल के सामने से गुज़री, हुआना ने पूछा कि ''इस महल में रहता कौन है? वे अन्दर करते क्या हैं?''

''अन्दर बाग-बगीचे हैं,'' मौसी ने बताया, ''और एक क़िताबघर भी। वहाँ वायसराय और उनकी पत्नी रहती हैं। वे आने वाले मेहमानों से मिलते हैं, और स्पेन के राजा को ख़त भेजते हैं। वहाँ कवि भी आते हैं और उम्दा नाटक खेले जाते हैं और संगीत सभाएं आयाजित की जातीं हैं।"

''मैं वहाँ रहना चाहती हूँ!'' हुआना ने हुलस कर कहा, '' मैं नाटक और गीत लिख सकती हूँ। उन कान्टो लेस कान्टो। मैं गाकर गीत सुना सकती हूँ। मैं मन लगाकर बहुत अध्ययन करूँगी,'' हुआना इनेस ने कहा। ''और तब मैं जन्मदिन और उत्सवों के लिए जितना अपने परिवार के लिए लिखती हूँ उससे भी बेहतर कविताएँ लिखूँगी। और टिया, मैं एक बड़े-सारे क़िताबघर में पढ़ सकूँगी।''

हुआना ने मन लगा कर अध्ययन किया और जब वह पंद्रह बरस की हुई उसके मौसी-मौसा उसे महल ले गए। "अच्छा तो तुम ही वह लड़की हो जो ढेरों क़िताबे पढ़ती है और खूबसूरत कविताएँ लिखती है," वायसराय की पत्नी ने कहा। "तुम गुलाब की कली-सी सुन्दर हो हुआना इनेस। क्या तुम यहाँ महल में रह कर मेरी सहायिका बनना चाहोगी?" हुआना के गाल लाल हो गए क्योंकि उसे लगा कि इतने लोग उसे घूर रहे हैं।

जिस सुबह वह महल के बड़े क़िताबघर में घुसी, वह एक बार फिर कछुए-सी चुप थी। आख़िरकार! इतनी ढ़ेर सारी क़िताबें! एक बड़ा सा कक्ष खज़ाने से भरा था। अब वह हर किस्म की क़िताबें छू सकती थी। उन्हें पढ़ सकती थी। उसने धीरे-धीरे उनके शीर्षक पढ़े। उसने पंचांगों और सितारों पर क़िताबें पढ़ीं, बाइबल में आई सारी स्त्रियों के बारे में पढ़ा, उसने यूनानी और रोमन कहानियाँ पढ़ीं।
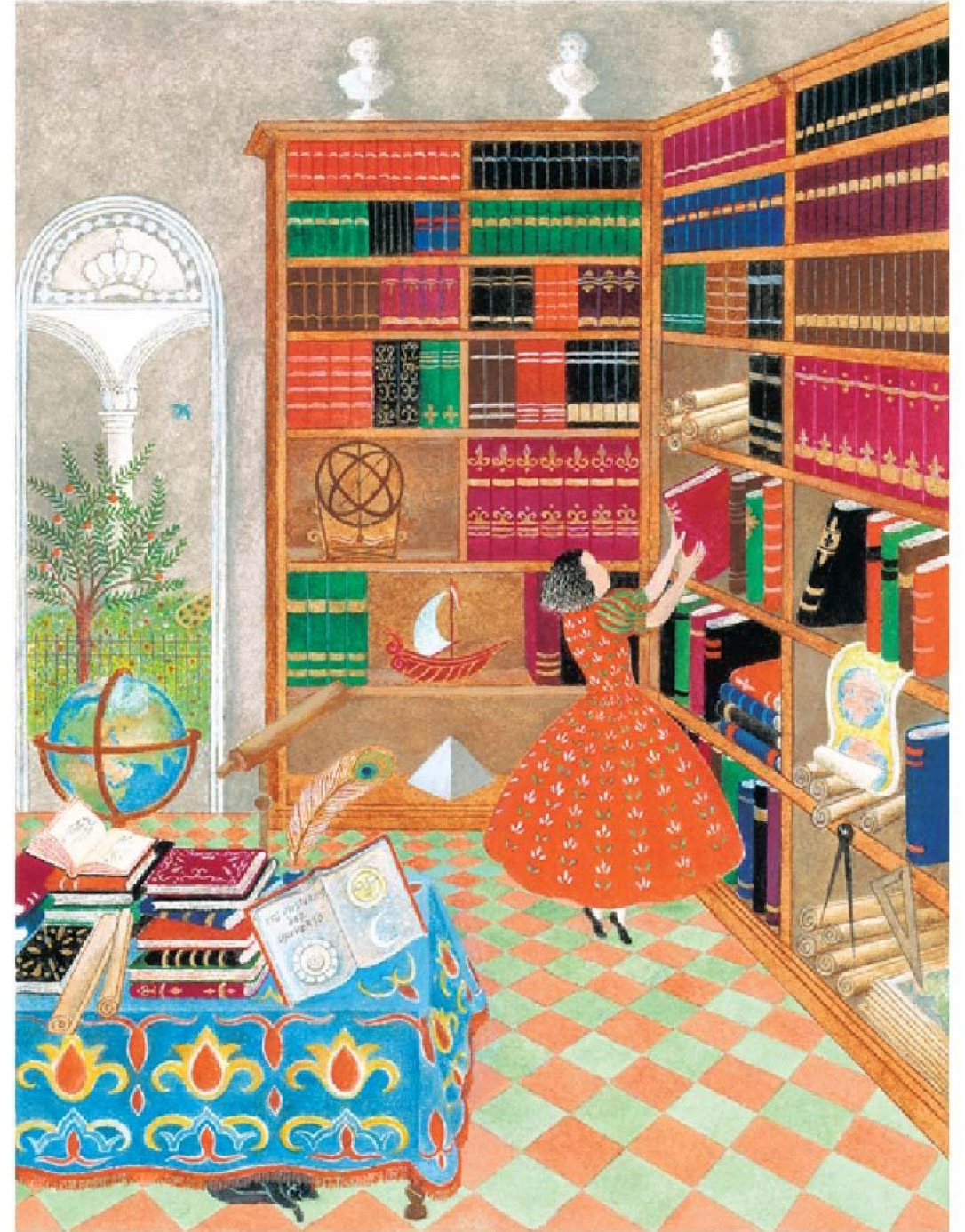
हुआना ने नाटक और गीत लिखे। जल्द ही कई लोगों को पता चल गया कि उसे शब्दों से खेलना पसन्द है। वे उसके पास आते और अपने लिए कविताएँ और पहेलियाँ लिखने को कहते। उसने गुलाब को ध्याान से देखने के बाद कहा, ''इसके काँटे हैं चुभने वाले शाही-अंगरक्षक।'' और क्योंकि वह अब भी जिज्ञासु थी उसने कहा, ''मैं यह सोचा करती हूँ कि अपनी शाखा से कटा गुलाब, ज़्यादा समय क्यों बना रहता है।'' वह हंस कर छेड़ते हुए कहती, ''अगर पुरुष खाना पकाना सीख लें तो वे बेहतर कविताएँ लिख सकेंगे।''

मुझे सिर्फ अपनी आँखों से सुनो,

क्योंकि कान नहीं सुन सकते आवाज़ बहुत दूर की,

मेरी कलम को सुनो, उसकी कराहों को भी,

जुदाई की कड़वी वेदना की अनुगूंज को सुनो,

और चूंकि तुम मेरी कर्कश धुन को पकड़ नहीं सकते,

अनसुना कर सुनो, उस दर्द को जो मिट चुका है।
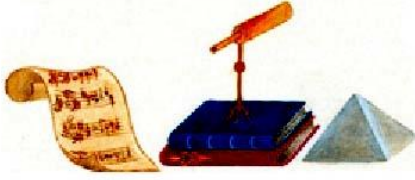
एक दिन वायसराय ने कहा, "हुआना इनेस, मैं विद्वानों से कहता रहता हूँ कि तुम कितनी चतुर हो, पर वे मेरा विश्वास ही नहीं करते। सो मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ। मैंने चालीस विद्वानों को आने को और तुमसे सवाल-जवाब करने को आमंत्रित किया है। मेरे दरबारी भी मौजूद होंगे और चर्चा के गवाह बनेंगे।

"अगर आप यही चाहते हैं सिनोर तो आदेश सिर-माथे है," हुआना ने कहा। "मेरा दिमाग वैसे ही सवालों से भरा रहता है। मैं तब से पढ़ रही हूँ, जब मैं तीन साल की थी, सो जवाब तो मैं तलाश ही लूंगी।"

"तीन साल की?" वायसराय की पत्नी ने पूछा।

"जी," हुआना हंसी। "मैं अपनी बड़ी बहन के पीछे-पीछे स्कूल पहुँच गई थी।"

हुआना सोचने लगी कि विद्वान उससे क्या पूछेंगे। उसका दिमाग भाषाओं, नामों संख्याओं और संगीत से भरा था।
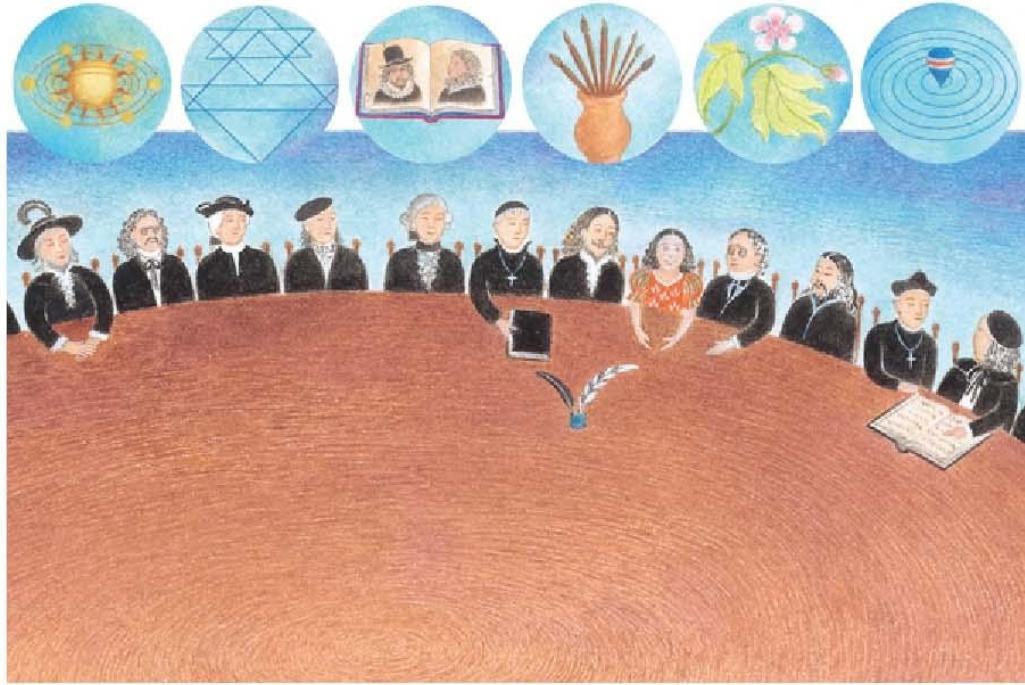
विद्‌वान अपने काले, लम्बे चोंगे पहने आए। वे बेहद गंभीर नज़र आ रहे थे। उन्होंने हुआना से त्रिकोणों, चित्रों, मशहूर पुरुषों, यहाँ तक कि सूरज की स्थिति में आने वाले बदलावों तक के बारे में सवाल पूछे।

हुआना ने हरेक सवाल का जवाब दिया। जब विद्‌वान पूछ चुके उन्होंने हामी में सिर हिलाए। हुआना मुस्कुराई और उसने कहा, "जी हाँ! लड़कियाँ भी कातने-सीने के अलावा भी कुछ कर सकती हैं। हम अध्ययन कर सकती हैं, और हम जो जानते हैं उसे सिद्ध भी कर सकती हैं।" वायसराय की पत्नी ने उसे गले लगाया और एक सुन्दर गुलाब भेंट किया।

हुआना को महल में रहना अच्छा लगता था, और वहाँ बनाए अपने दोस्त भी पसन्द थे। पर वह और सीखते जाना चाहती थी। उसे सोचने और पंख से बनी अपनी कलम से लिखने के लिए एकान्त चाहिए था। सो उसने नन (ईसाई साध्वी) बनने का फ़ैसला किया। उन्होंने अपना नाम इनेस दे ला क्रूज़ (क्रास या सलीब की इनेस)। उन्हें कॉन्वेन्ट की शान्ति भाने लगी। उन्होंने अपने निजी क़िताबघर में तमाम क़िताबें जोड़ीं, जब तक कि वह उत्तरी और दक्षिणी अमरीका का सबसे बड़ा क़िताबघर न बन गया। अपने लम्बे चोंगे में वे दुआ करतीं, अध्ययन करतीं, ख़त लिखतीं, धर्मगीत, नटक व कविताएँ लिखतीं। उनके दोस्त उनसे मिलने आते। वे उनके साथ हंसतीं-बतियातीं, पहेलियाँ पूछतीं।

"यह लो सोर (सिस्टर) हुआना इनेस," उनकी एक अच्छी मित्र ने एक दिन कहा। "यह दोनों अमरीकाओं की एक प्रमुख कवियत्री की क़िताब है।" सोर हुआना ने बड़े आराम से क़िताब पर लिपटा कागज़ खोला। मुखपृष्ठ पर उनका ही नाम था! उन्होंने क़िताब दोनों हाथों में थाम दिल से चिपटाई। उस रात सोर हुआना ने अपने क़िताबघर में अपनी लिखी किताब भी जोड़ी।
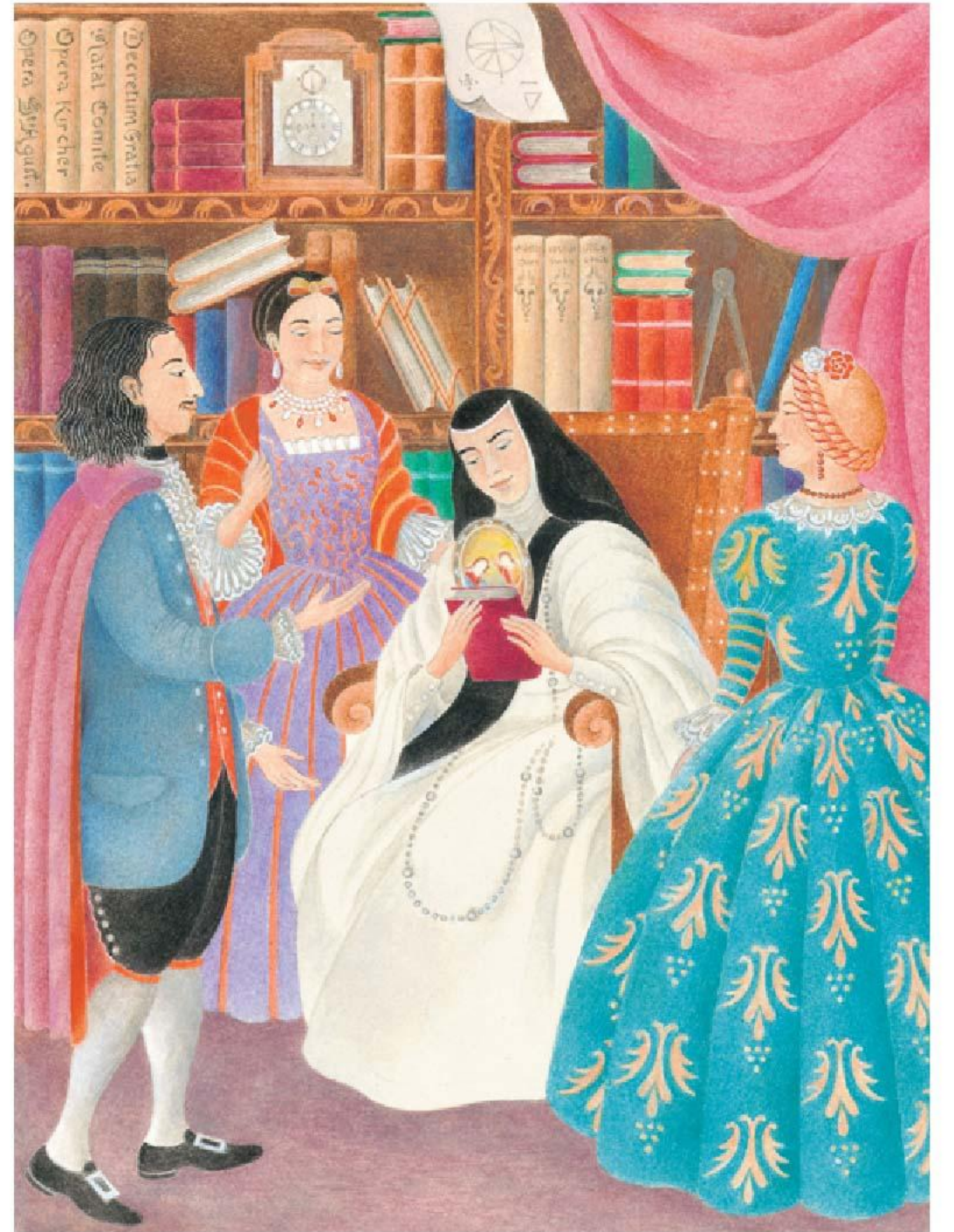
लेखक की कलम से

कवियत्री, महिला शिक्षा की पैरोकार, बुद्धिजीवी, नाटककार, पर्यावरणविद, हाज़िरजवाब, मैं सतरहवीं शताब्दी की मैक्सीकी लेखिका हुआना रेमिरेज़ देस अस्बाने, जो सोर हुआना इनेस भी कहलाती थीं, पर फ़िदा हूँ। हम इस असाधारण प्रतिभावाली बालिका के बारे में केवल कुछ ही तथ्य जानते हैं। वे सान मिग्युएल दे नेपांटला के एक ग्रामीण इलाके में, उस समय जन्मीं थी जब स्पेन के शासक द्वारा नियुक्त वायसराय मैक्सिको का राजकाज चलाता था।

उनके शब्द ज्ञान के प्रति उनके गहन प्रेम और उनके जिज्ञासु मस्तिष्क को उजागर करते हैं। बरॉक शैली में रची गई उनकी कविताएँ बेहद लोकप्रिय थीं। उन्हें चित्र आँकना, संगीत बजाना, वैज्ञानिक उपकरण इकट्ठा करना, पढ़ना, और अपने विशाल और विख्यात क़िताबघर की हज़ारों क़िताबों का अध्ययन करना पसन्द था। जब मैक्सिको में प्लेग फैला सोर हुआना ने रोगी ननों की देखभाल की। पर वे खुद भी उस महामारी के चपेट में आ गईं। 17 अप्रेल 1695 में उनकी मृत्यु हो गई।

इस मैक्सीकी प्रतिभा और मैक्सिको की फीनिक्स (वह जादुई पक्षी जो जलने के बाद फिर जी उठता है) का चित्र मैक्सिको की मुद्रा पर छपा है। उनके शब्द हिस्पानी बोलने वाली दुनिया के बच्चे और वयस्क कंठस्थ कर सुनाया करते हैं। सोर हुआनाः लैटिन अमरीका की प्रथम महिला कवियत्री हैं।
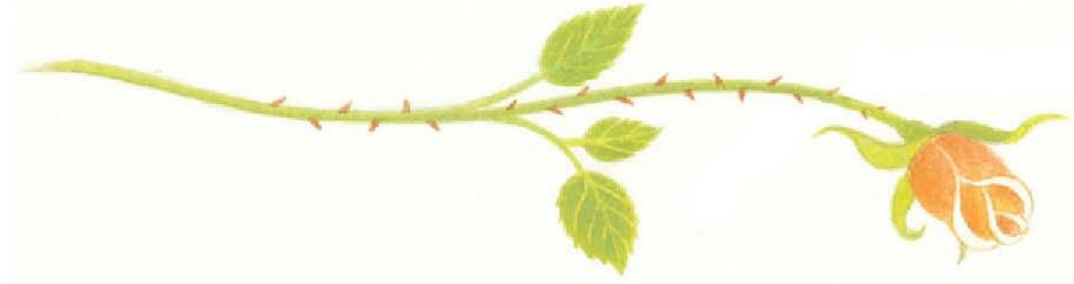
पैट मोरा जो अपनी कविताओं, नॉन-फिक्शन व बच्चों की क़िताबों के लिए मशहूर हैं, वे अपनी साथी कवियत्री हुआना इनेस की प्रशंसक हैं। उन्हें नैशनल एन्डाओमेंट फॉर आर्टस् पोएट्री फैलोशिप तथा कैलोग राष्ट्रीय फैलोशिप मिल चुकी है। उन्होंने किशारों के लिए भी अद्‌भुत किताबें लिखी हैं, जिनमें *टोमास एण्ड द लाइब्रेरी लेडी* शामिल है।

वे मूलतः एल पासो टैक्सास से हैं। वे बहु-सांस्कृतिक शिक्षा की पैरोकार हैं, और देश भर में यात्राएँ कर बोलती हैं। वे अपना समय दक्षिण-पश्चिम तथा केन्टकी के बीच बिताती हैं।

बिएट्रिज़ विडाल ने काँच, बारीक ब्रशों और पानी के रंगों की मदद से बने इन चित्रों से हुआना इनेस की कहानी को जीवन्त बनाया है। उनकी तकनीक उसी प्रकार की है जिसका उपयोग सैकड़ों साल पहले हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को चित्रित करने के लिए किया जाता था। सुश्री विडाल अर्से से सोर हुआना इनेस तथा उनकी कविता की प्रशंसक रही हैं। वे अर्जेन्टीना में पैदा हुईं थीं। उन्होंने कई सुन्दर बाल पुस्तकों को चित्रित किया है, जिसमें नैन्सी वैन लान की रचनाएं *द लैजेण्ड ऑफ एल डोराडो* तथा *रेनबो क्रो* शामिल हैं। उनके चित्रों का उपयोग पीबीएस कार्यक्रम तथा युनिसेफ के कार्डों पर भी किया गया है। वे न्यू यॉर्क शहर में रहती हैं तथा पेरिस व अर्जेन्टीना में भी समय बिताती हैं।